Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

आचार्य भरत के समकालीन संगीत विद्वान

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

आचार्य भरत के समकालीन संगीत विद्वान

Dr. Ila Malviya*

Head of Department, Department of Music, Associate Professor and Sr. Singing Arya Kanya Degree College, Allahabad

सार – ***कोहल भरत मुनि की परम्परा के सर्वाधिक प्रशंसित आचार्य रहे होंगे। यद्यपि भरत मुनि के पुत्र होने से उन्हें भरत का समकालीन मानना चाहिए तथापि रामकृष्ण कवि इनका समय ईसवी पूर्व तीसरी शती मानते हैं। आचार्य अभिनवगुप्त ने अनेक स्थानों पर कोहल के मत का उल्लेख किया है तथा कोहल को आचार्य भरत का समकालीन माना है। इसी कारण अनेक प्रसंगों में आचार्य अभिनवगुप्त ने उनके मत का उल्लेख किया है। कोहल अनेक ग्रन्थों के प्रणेता थे। अभिनवभारती से ज्ञात होता है कि कोहल मत का 'सांगीतमेरु' नामक किसी ग्रन्थ में संग्रह था। 'संगीतरत्नाकर' के टीकाकार कल्लिनाथ का भी 'सांगीतमेरु' से परिचय था किन्तु यह ग्रन्थ अप्राप्य है।[1] 'ताललक्षणम्' नाम के एक दूसरे ग्रन्थ के रचयिता भी कोहल कहे जाते हैं, किन्तु किसी प्राचीन ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ का उल्लेख नहीं किया है।***

----------X----------

मद्रास के शासकीय हस्तलिखित ग्रन्थागार में कोहल द्वारा रचित ग्रन्थ का तेरहवाँ अध्याय विद्यमान है। इस ग्रन्थ का नाम है 'कोहलरहस्यम्'। यह ग्रन्थ खण्डित है। इसमें कोहल का भरत पुत्र के रूप में उल्लेख है। इस ग्रन्थ मं कोहल और मतंग के परस्पर संवाद के रूप में संगीत विषयों की चर्चा की गई है। कोहल भरत के समकालीन थे जबकि मतंग बहुत बाद में हुए। अतः यह ग्रन्थ कोहल का न होकर किसी परवर्ती लेखक का मानना चाहिए।

कोहलाचार्य का 'कोहलमतम्' नामक अन्य ग्रन्थ भी मिलता है, जो अल्प मात्रा में है। इसमें पुष्पाजंलि का स्वरूप मात्र बताया गया है। इसके अतिरिक्त लन्दन के इण्डिया ऑफिस संग्रहालय में एक ग्रन्थ विद्यमान है, जिसका नाम 'कोहलीयम्' है। यह ग्रन्थ तालपत्र पर लिखित है। आचाग्र कोहल के सभी ग्रन्थ अपूर्ण रूप में है। निःसंदेह कोहल नृत्य, नाट्य और संगीत के आचार्य थे। उनके मत का परवर्ती लेखकों ने बड़े सम्मान के साथ उल्लेख किया है।

"शेषमुत्तरतन्त्रेण कोहलस्तु करिष्यति।

प्रयोगान् कारिकाश्चैव निरुक्तानि तथैव च।"[2]

स्वातिः- नाट्यशास्त्र के अनुसार, यह भी भरत के समाकलीन आचार्य थे। नाट्यशास्त्र में कहा गया है -

"स्वातिर्भाण्डनियुक्तस्तु सह शिष्यैः स्वयंभुवा।।"[3]

अर्थात् "ब्रह्मा ने स्वाति को शिष्यों सहित वाद्य यन्त्र में नियुक्त किया।" इसके आगे भरत मुनि कहते हैं -

"स्वातिनारदसंयुक्तो वेदवेदांगकारणम्।

उपस्थितोऽहं लोकेश प्रयोगार्थं कृतांजलिः।।"[4]

अर्थात् "मैं (भरत) वेद और वेदांगों से निष्पन्न नाट्यशास्त्र का अच्छी तरह अध्ययन करके स्वाति और नारद के साथ ब्रह्मा के समख हाथ जोड़कर नाटक के प्रयोग के लिए उपस्थित हुआ।"

भरत के नाट्यशास्त्र में स्वाति को मुनि और महामुनि कहकर उनका सम्मान किया है। उनको पुष्करवाद्यों का आविष्कारकत्ता बताया है। नाट्यशास्त्र में अवनद्ध वाद्यों के लिए 'पुष्कर' नाम प्रयुक्त हुआ है। भाण्ड सभी वाद्य यन्त्रों का सामान्य नाम है। स्वाति मुनि बहुत से भाण्ड बजा सकते थे, इसीलिए ब्रह्मा ने उन्हें नाटक की सफलता के लिए नियुक्त किया। पुष्कर वाद्यों के आविष्कार के लिए स्वाति मुनि ने कमल-पत्र पर गिरती हुई वर्षा की बूँदों की ध्वनि को आधार बनाया।

पतन्तीभिश्च धाराभिर्वायुवेगाज्जलाशये।

पुष्करिण्यां पटुः शब्दः पत्राणामभवत्तदा।।

तेषां धारोद्भवं शब्दं निशम्य सहसा मुनिः।

www.ignited.in

आश्चर्यमितति मन्वानश्चावधारितवांश्च तम्।।

ज्येष्ठमध्यकनिष्ठन्तु पत्राणाभवधार्य च।

गम्भीरमधुरं हृद्यमाजगामाश्रमं ततः।।

गत्वा सृष्टं मृदङ्गाँश्च पुष्करानसृजत्ततः।

पणवं दर्दुराश्चैव सहितो विश्वकर्मणा।।[5]

वर्षा की धारा से जो पवुष्कर दल (कमल-पत्र) पर भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न हुई उन्हीं से स्वाति मुनि को पुष्कर वाद्य (मृदंग) के निर्माण की प्रेरणा मिली।

आचार्य भरत ने यह भी कहा है कि स्वाति ने चमड़े से मढ़े हुए झल्लरी, पटह इत्यादि वाद्य भी बनाए।

"झल्लरीपटहादीनि चर्मनद्धानि तानि च।"[6]

इसके अतिरिक्त स्वाति विपंची वीणा के वादक भी थे। इन सब वर्णनों से ज्ञात होता है कि स्वाति मुनि एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे तथा बहुत उच्चकोटि के संगीत वादक तथा वाद्यों के आविष्कारकत्ता थे।

नारदः- भारतीय संगीत में नारद का एक विशिष्ट स्थान है। नारद गन्धर्व थे और गायन तथा वादन दोनों में पारंगत थे। नाट्यशास्त्र के अनुसार, ब्रह्मा ने नारद आदि गन्धर्वो को नाटक के लिए गान में नियुक्त किया था।

"नारदाद्याश्च गन्धर्वा गानयोगे नियोजिताः।"[7]

नारद की वीणा 21 तारों की थी, जिसका नाम महती था। सम्भवतः यही वीणा बाद में मत्तकोकिला के नाम से प्रसिद्ध हुई। नारद निर्गीत अथवा बहिर्गीत के निर्माता माने गए है।

नारद के नाम से तीन ग्रन्थ प्रचलित हैं - 'नारदीय शिक्षा', 'संगीत मकरन्द', 'पंचमसार संहिता'। इनमें सर्वाधिक प्राचीन नारदीय शिक्षा है, जिसमें वैदिक संगीत का विस्तृत वर्णन है और लौकिक संगीत की प्रारम्भिक अवस्था का वर्णन है। श्री मनमोहन घोष के अनुसार, कुछ प्रक्षिप्त अंशों को छोड़कर मुख्य 'नारदीय शिक्षा' का प्रणयन ई.पू. छटीं शता. तक हो चुका था। अतः वह नाट्यशास्त्र से प्राचीन है।

नारद देवगनधर्व थे। कदाचित् नारद नाम के कोई भू-गन्धर्व भी थे, जिनका एक विशिष्ट सम्प्रदाय था। यह भी हो सकता है कि इन भू-गन्धर्वो का 'नारद' एक गोत्र-नाम बन गया हो। इसलिये भिन्न-भिन्न समय पर नारद के नाम से भिन्न-भिन्न ग्रन्थ रचे हुए मिलते हैं।

तुम्बुरु

नाट्यशास्त्र में रेचक, करण, अंगहार तथा संगीत के प्रसंग में तुम्बुरु का उल्लेख मिलता है। तुम्बुरु नृत्य-संगीत के प्रसिद्ध आचार्य थे तथा प्रत्येक संगीत के अवसर पर इनका सहयोग प्राप्त रहने का उल्लेख पुराणों में प्राप्त होता है। इनका नाम प्रायः नारद के साथ लिया गया है। कम्बोज (कम्बोडिया) के एक अभिलेख में तुम्बुरु गन्धर्व तन्त्र के विद्वान माने गए हैं। महाभारत में तुम्बुरु गन्धर्व गायक के रूप में स्मरण किए गए हैं-"गन्धर्वैः सहितः श्रीमान् प्रागायत च तुम्बुरु।" शार्ङगदेव के अनुसार, तुम्बुरु ने सर्वप्रथम धैवत और निषाद स्वरों को पृथक् रूप में पहिचाना। 'संगीतरत्नाकर' के टीकाकरण कल्लिनाथ ने यत्र-यत्र तुम्बुरु का मत उद्धृत किया है। किन्तु, उनके किसी ग्रन्थ का नाम नहीं लिया। कुछ विद्वानों ने राग-रागिनियों के गायन समय के लिए 'तुम्बुरु नाटक' नामक तुम्बुरु के किसी ग्रन्थ से उदाहरण दिया है। किन्तु, यह ग्रन्थ तुम्बुरु का नहीं हो सकता क्योंकि तुम्बुरु भरत के समकालीन हैं और उस समय राग-रागिनियों के गान समय का बन्धन नहीं था।

शाण्डिल्यः-

आचार्य शाण्डिल्य भी भरत के समकालीन विद्वान हैं। भरत के नाट्यशास्त्र में शाण्डिल्य का उल्लेख इस प्रकार हुआ है-

"शाण्डिल्यं चैव वात्स्यं च कोहलं दत्तिलं तथा।"[8]

अर्थात् भरत मुनि ने जब अपने सौ पुत्रों (शिष्यों) का नाम गिनाना आरम्भ किया तो सर्वप्रथम उन्होंने शाण्डिल्य का नाम लिया। जिससे सिद्ध होता है कि शाण्डिल्य या तो उनके ज्येष्ठ पुत्र थे अथवा पट्ट शिष्य।

अभिनव गुप्त ने अभिनवभारती के कुछ स्थलों में शाण्डिल्य के मत का उद्धरण दिया है। वाल्मीकीय रामायण में 'तिलक' टीका में एक-दो स्थानों पर शाण्डिल्य का मत दिया गया है। शाण्डिल्य ने भी संगीत अथवा नाट्य सम्बन्धी कोई ग्रन्थ अवश्य लिखा होगा, जो कि अभिनवगुप्त और अन्य टीकाकारों को उपलब्ध रहा होगा। किन्तु अब उनका ग्रन्थ लुप्त है।

नन्दी या नन्दिकेश्वरः-

राशेखर मं 'काव्यमीमांसा' में पुरातन आचार्यो की नामावली देते हुए नन्दिकेश्वर के बारे में कहा है -

"रसाधिकारिकं नन्दिकेश्वर।"[9]

इससे यह ज्ञात होता है कि नन्दिकेश्वर रस विषय के पहले आचार्य थे। कुछ ग्रन्थों में उन्हें अन्य विषयों का आचार्य भी माना गया है। महामुनि भरत को नाट्यशास्त्र के निर्माण की ृप्रेरणा या शिक्षा नन्दिकेश्वर से मिली थी। नाट्शास्त्र मं कहा गया है कि तंडु, जिनका दूसरा नाम नन्दिकेश्वर था, ने अंगहारों, करणों और रेचकों के अभिनय की शिक्षा भरत को दी थी।

"ततस्तण्डुं समाहूय प्रोतवान् भुवनेश्वरः।।

प्रयोगमङ्गहाराणां आचक्ष्व भरताय वै।

ततो वै तण्डुसम्प्रोक्तांस्त्वङ्गहारान् महात्मना।।"[10]

तण्डु ही नन्दी या नन्दिकेश्वर थे, इसकी पुष्टि 'अभिनवभारती' से भी होती है। आचार्य अभिनवगुप्त ने तण्डु शब्द नन्दी का ही नाम या पर्यारू माना है। नन्दी ही तण्डु थे जिन्होंने भरत को ताण्डव-नृत्य का शिक्षण दिया था। अतएव नन्दी भरत से किंचित् पूर्ववर्ती माने जा सकते हैं।

मद्रास की खोज रिपोर्ट में नन्दिकेश्वर के नाम से 'ताल लक्षण' तथा 'तालादि लक्षण' ग्रन्थों की चर्चा हुई है। इस दृष्टि से ऐसा जान पड़ता है कि उन्हें 'ताल' (वाद्य संगीत) अत्यन्त प्रिय था। रामकृष्ण कवि के मतानुसार, नन्दिकेश्वर ने 'नन्दिकेश्वर संहिता' की रचना की थी, जिसका केवल पात्र सम्बन्धी परिच्छेद नष्ट होने से बच गया और सम्भवतः वही अवशिष्ट परिच्छेद वर्तमान 'अभिनव दर्पण' है।

दत्तिलः-

कोहल के समान ही दत्तिल भी नाट्यशास्त्र में भरत के पुत्रों में गिनाए गए हैं-"शाण्डिल्यं चैव वात्सयं च कोहलं दत्तिलं तथा"[11] अतः इसमें सन्देह नहीं रह जाता कि दत्तिल भी शाण्डिल्य और कोहल के समान भरत के समकालीन आचार्य थे। दत्तिल नाट्यविद्या तथा संगीत के प्रामाणिक ग्रन्थकार थे। अभिनवगुप्त ने अभिनवभारती के 28वें अध्याय में दस स्थानों पर दत्तिल के मत का उद्वरण दिया है किन्तु, उनके ग्रन्थ का नामोल्लेख नहीं किया है। रामकृष्ण कवि के अनुसार, प्रथम शती ई0 के एक शिलालेख में दत्तिल का उल्लेख मिलता है। जर्नल ऑफ़ आन्ध्र हिसतोरिकल रिसर्च सोसाइटी के एक लेख में रामकृष्ण कवि ने लिखा है कि ध्रुवागान और ताल के दत्तिल एक अधिकारी विद्वान माने गए हैं।

श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्छना, जाति इत्यादि के सम्बन्ध में दत्तिल के मत का जो यत्र तत्र उल्लेख मिलता है वह भरत मत के अनुसार है। श्री रामकृष्ण कवि ने दत्तिल का काल प्रथम ई. शती माना है। इस कल्पना का आधार प्रथम ई. शती का शिलालेख है। किन्तु दत्तिल भरत के पुत्र अथवा शिष्य थे तो उन्हें भी भरत का ही समकालीन मानना चाहिए।

दत्तिल के ग्रन्थों के बारे में भी विद्वानों ने उल्लेख किया है नृत्तकला के विषय में 'दत्तिलकोहलीयम' नामक एक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ मं नृत्यकला का विशद वर्णन है। किन्तु श्रीरामकृष्ण कवि ने इस ग्रन्थ को विक्रमी 17वीं सम्वत् में, 'संगीतरत्नाकर' के आधर पर लिखा हुआ माना है। जबकि दत्तिल भरत के समकालीन है। श्री रामकृष्ण कवि ने 'गन्धर्ववेदसार' नामक उनकी एक कृति मानी है। इसके अतिरिक्त 'नृत्तलक्ष्ण' नामका भी एक ग्रन्थ कई ग्रन्थों में दत्तिल के नाम से उद्धृत है। किन्तु, वह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त दत्तिलम् उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है।

काश्यप

श्री बाबूलाल शुक्ल जी के अनुसार, काश्यप भी कोहल के समान भरत के समकालीन संगीत तथा नाट्यशास्त्र के आचार्य थे। आचार्य अभिनवगुप्त इन्हें भरत के समान प्रतिष्ठत आचार्य मानते थे। इन्होंने अभिनवभारती में जातियों और रागों के विषय में कश्यप का उल्लेख किया है। आश्यप नाम के ही एक और विद्वान हुए है जिनका नाम अष्टाध्यायी में दो बार आया है। यथा-

"तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य" एवं "नोदात्तस्वरितोदयमगाग्र्य-काश्यपगालवानाम्"

ये आचार्य महाभारत युद्ध के समय हुए। इन्होंने व्याकरण, कल्प, छंदशास्त्र, आयुर्वेद, पुराण और दर्शन सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे। किन्तु, इन ग्रन्थों के रचयिता और पूर्वोक्त संगीत सम्बन्धी ग्रन्थ के रचयिता एक ही व्यक्ति है, यह कहना कठिन है। सम्भवतः काश्यप नाम के एकाधिक विद्वान आचार्य हुए हैं।

उपर्युक्त आचार्यो के अतिरिक्त अश्मचुट्ट, नखकुट्ट, बादरायण, विशाखिल और शातकर्णी आदि कुछ ऐसे आचार्य हैं जिनका नामोल्लेख नाट्यशास्त्र में है तथा अन्य ग्रन्थों में इनके मत भी प्राप्त होते हैं, किन्तु इन आचार्यो के किसी ग्रन्थ आदि का नाम नहीं प्राप्त होता। ये सभी आचार्य भरत के समकालीन रहे होंगे तथा अपने विषयों के विद्वान रहे होगें, अतः इनकी ऐतिहासिकता पर सन्देह करने का कोई कारण नहीं हो सकता।

www.ignited.in

संदर्भ सूची:-

1. भारतीय संगीत का इतिहास - ठाकुर जयदेव सिंह
2. नाट्य शास्त्र 36/18
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास - वाचस्पति गैरोचा
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास - वाचस्पति गैरोचा
5. काव्य प्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर
6. नाट्य शास्त्र - श्री बाबू लाल शुक्ल – पृ.सं. 40
7. नाट्य शास्त्र - श्री बाबू लाल शुक्ल
8. नाट्य शास्त्र 1/26
9. नाट्य शास्त्र 1/26
10. अष्टाध्यायी - 1, 2, 25 एवं 8, 4, 66

Corresponding Author

Dr. Ila Malviya*

Head of Department, Department of Music, Associate Professor and Sr. Singing Arya Kanya Degree College, Allahabad